मेंढकी राजकुमारी जैसी लोक कथाऐं

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Mendhak Rajkumar Jaisi Kahaniyan (Frog Prince Like Stories)
Cover Page picture : Frog
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
मेंढकी राजकुमारी जैसी लोक कथाऐं 6
1 मेंढकी राजकुमारी 8
2 ज़ारेवना मेंढकी 25
3 मेंढक की खाल 40
4 चुहिया राजकुमारी 53
5 बॅदरिया दुलहनियॉ 69

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2016

मेंढकी राजकुमारी जैसी लोक कथाऐं

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम दस पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। "एक कहानी कई रंग–1" में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ थीं।[1]

इसकी दूसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियॉ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[2]

इस सीरीज़ की तीसरी पुस्तक "छह हंस" जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियॉ बहिन भाई के प्यार की कहानियॉ हैं।[3]

इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" कहानी जैसी हैं।[4]

इसी सीरीज़ की पॉचवी पुस्तक में "सफेद राजकुमारी और सात बौने"[5] वाली कहानी जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं। यह कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है।

इस सीरीज़ की छठी पुस्तक में "सोती हुई सुन्दरी..." जैसी कहानियॉ हैं।[6]

इस सीरीज़ की सातवीं पुस्तक में "सूअर राजा"[7] जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं।

इस सीरीज़ की आठवीं पुस्तक में "बूट पहने हुए बिल्ला"[8] जैसी कुछ लोक कथाऐं दी गयी हैं।

इस सीरीज़ की नवीं पुस्तक में "हैन्सैल और ग्रेटैल" जैसी कहानियॉ दी गयी हैं।[9]

---

[1] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"
[2] "One Story Many Colors-2" – like "Tom Thumb"
[3] "One Story Many Colors-3" – like "Six Swans"
[4] "One Story Many Colors-4" – like "Three Oranges"
[5] "One Story Many Colors-5" – like" Snow White and the Seven Dwarves"
[6] "One Story Many Colors-6" – like "Sleeping Beauty"
[7] "One Story Many Colors-7" – like "The Pig King" (in 3 parts)
[8] "One Story Many Colors-8" – like "Puss in Boots"
[9] "One Story Many Colors-9" – like "Hansel and Gratel"

इस सीरीज़ की दसवीं पुस्तक में "रैड राइडिंग हुड"[10] जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी थीं।

इस सीरीज़ की ग्यारहवीं और बारहवीं पुस्तक में "सिन्डरैला जैसी कहानियॉ"[11] दी गयी थीं।

इस सीरीज़ की तेरहवीं पुस्तक में "रम्पिलस्टिलटस्किन जैसी कहानियॉ"[12] दी गयी थीं।

इस सीरीज़ की चौदहवीं पुस्तक थी "अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ"[13]।

इस सीरीज़ की पन्द्रहवीं पुस्तक थी "मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ"[14]

और अब यह सोलहवीं पुस्तक प्रस्तुत है "मेंढकी राजकुमारी जैसी कहानियॉ। तुम लोगों ने मेंढक राजकुमार की कहानी तो पढ़ी ही होगी जिसमें एक मेंढक बाद में राजकुमार बन जाता है।

पर इन कहानियों में मेंढक राजकुमार नहीं बनता बल्कि मेंढकियॉ या कोई और जानवर राजकुमारी या लड़की बन जाती है। इसलिये इस संग्रह में मेंढक राजकुमार जैसी कहानियॉ शामिल नहीं की गयी हैं। वैसी कहानियॉ "सूअर राजा जैसी कहानियॉ–**2**" में दी गयी हैं। मेंढकी राजकुमारी की कहानी एक बहुत ही लोकप्रिय और मशहूर कहानी है। पर तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वैसी कथा केवल वहीं नहीं पायी जाती कई और जगहों पर भी कही सुनी जाती है। इस पुस्तक में हमने तुम्हारे लिये वैसी ही कुछ कथाऐं इकट्ठी कर के यहॉ रखी हैं। तो लो पढ़ो मेंढकी राजकुमारी जैसी कुछ कहानियॉ...

---

[10] "One Story Many Colors-10" – Like "Red Riding Hood"

[11] "One Story Many Colors-11 and 12" – Like "Cinderella"

[12] "One Story Many Colors-13" – Like "Rumplestiltuskin"

[13] "One Story Many Colors-14" – Like "Ali Baba and Forty Thieves"

[14] "One Story Many Colors-15" – Like Crocodile and Monkey"

1 मेंढकी राजकुमारी[15]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बार रूस में एक राजा और रानी रहते थे। उनके तीन बेटे थे।

जब वे राजकुमार बड़े हो गये तो राजा ने उनको बुलाया और बोला — "मेरे प्यारे बेटों, अब तुम्हारी शादी का समय आ गया है। तुम लोग ऐसा करो कि अपने अपने तीर कमान लो और उससे अपना अपना तीर फेंको। जो लड़की तुम्हारा तीर वापस ले कर आयेगी वही तुम्हारी दुलहिन होगी।"

तीनों राजकुमारों ने पिता को सिर झुकाया, अपना अपना तीर कमान उठाया, तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की डोरी खींच कर तीर चला दिया।

सबसे बड़े बेटे का तीर एक कुलीन आदमी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

दूसरे बेटे का तीर एक व्यापारी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

और तीसरे और सबसे छोटे बेटे का तीर? वह कहॉ गिरा और उसे कौन ले कर आया?

---

[15] The Frog Princess – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे राजकुमार इवान[16] ने जो अपना तीर चलाया तो वह इतना ऊँचा गया कि उसको तो वह दिखायी ही नहीं पड़ा।

वह बेचारा आधे दिन तक अपना तीर ढूँढता रहा तब कहीं जा कर उसको वह तीर जंगल के एक तालाब में मिला।

एक मेंढकी जो पानी में उगी हुई लिली के एक फूल पर बैठी हुई थी उसने उसको अपने मुँह में पकड़ा हुआ था।

जब राजकुमार इवान ने उस मेंढकी से अपना तीर वापस माँगा तो वह बोली — "मैं तुम्हारा तीर तभी वापस करूँगी जब तुम मुझे अपनी दुलहिन बनाओगे।"

राजकुमार इवान कुछ नफरत के साथ बोला — "पर एक राजकुमार एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता है?"

राजकुमार अपने तीर को एक मेंढकी के मुँह में देख कर बहुत गुस्सा था पर वह अपने पिता की बात नहीं टाल सकता था इसलिये उसने उस मेंढकी को उठाया और उसको अपने महल ले गया।

[16] Prince Ivan – name of the third and the youngest Prince

जब उसने राजा को अपनी कहानी सुनायी और उसको मेंढकी दिखायी तो राजा ने कहा — "मेरे बेटे, अगर तुम्हारी किस्मत में एक मेंढकी से ही शादी करना लिखा है तो यही सही।"

सो उस रविवार को तीन शादियॉ हुईं – बड़े बेटे की शादी एक कुलीन आदमी की बेटी से हुई, बीच वाले बेटे की शादी एक व्यापारी की बेटी से हुई और तीसरे सबसे छोटे बेटे इवान की शादी एक मेंढकी से हुई।

कुछ समय बीत गया तो राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, मैं यह देखना चाहता हूँ कि मेरे किस बेटे की पत्नी मेरे लिये सबसे अच्छी कमीज बना सकती है?"

तीनों बेटों ने पिता को सिर झुकाया और अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े बेटों को तो कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि उनकी पत्नियॉ को सिलाई आती थी पर सबसे छोटा वाला बेटा दुखी मन से अपने घर आया।

उसको दुखी देख कर मेंढकी कूदती हुई उसके पास आयी और टर्रायी — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

इवान बोला — "आज तो मुझे नीचा देखना पड़ेगा। राजा ने कहा है कि तुम उनके लिये सुबह तक एक कमीज सिल दो।"

मेंढकी बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

राजकुमार खाना खा कर सो गया। जैसे ही राजकुमार सो गया मेंढकी दरवाजे से कूद कर बाहर चबूतरे पर निकल गयी। उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों मेरी पुकार सुनो, एक कमीज सिलो जैसी मेरे पिता पहनते थे

बस रात भर में कमीज तैयार थी। सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो वह मेंढकी मेज पर बैठी थी। उसके हाथ में एक कढ़े हुए कपड़े में लिपटी हुए एक कमीज थी।

राजकुमार तो उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास गया। राजा उस समय अपने बड़े बेटों की लायी हुई कमीजें देख रहा था।

उसके पहले बेटे ने उसके सामने अपनी लायी कमीज फैला कर दिखायी। राजा ने उस कमीज को उठाया और बोला — "यह कमीज तो एक किसान के पहनने लायक भी नहीं है।"

फिर उसके दूसरे बेटे ने अपनी लायी हुई कमीज राजा के सामने फैलायी तो राजा उसको देख कर नाक भौं सिकोड़ कर बोला — "अरे, इस कमीज को तो कोई बरतन बनाने वाला भी नहीं पहनेगा।"

अब इवान की बारी आयी तो उसने भी अपनी लायी कमीज राजा के सामने फैलायी। उसकी कमीज तो बहुत ही सुन्दर सोने और चॉदी के तारों से कढ़ी हुई थी। उसको देखते ही राजा का दिल खुश हो गया और उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

वह बोला — "हॉ यह कमीज है राजा के पहनने के लायक।"

कमीजें दिखा कर तीनों राजकुमार अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े वाले बेटे बुड़बुड़ाते चले जा रहे थे — "हम लोग इवान की पत्नी की बेकार में ही हॅसी उड़ा रहे थे। लगता है कि वह जरूर ही कोई जादूगरनी है।"

फिर कुछ समय और बीत गया। राजा ने अपने तीनों बेटों को एक बार फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम्हारी पत्नियों को अबकी बार मेरे लिये सुबह तक एक डबल रोटी बनानी है। देखते हैं कि तीनों में से सबसे अच्छा खाना कौन बनाता है।"

इस बार फिर राजकुमार इवान फिर महल से बहुत दुखी हो कर चला। जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा —

"ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुकुम सुनाया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

इस बीच दोनों बड़े बेटों ने शाही रसोईघर से एक बुढ़िया को बुलवा भेजा और यह देखने के लिये उसको इवान के घर भेजा कि देख कर आओ कि वह मेंढकी खाना कैसे बनाती है।

पर मेंढकी ने भी यह भॉप लिया कि उन दोनों के मन में क्या था। उसने थोड़ा सा आटा बनाया, उसको बेला और सीधे आग में डाल दिया।

वह बुढ़िया यह खबर देखने के लिये जल्दी से सीधी उन दोनों भाइयों के पास आयी तो उन दोनों भाइयों की पत्नियों ने भी ऐसा ही किया जैसा मेंढकी ने किया था।

पर जैसे ही वह बुढ़िया वहॉ से चली गयी मेंढकी कूद कर दरवाजे के बाहर चबूतरे पर गयी और अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने फिर ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों इतनी मीठी डबल रोटी बनाओ, जैसी मेरे पिता खाते थे

अगली सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो एक सफ़ेद कपड़े में लिपटी हुई एक करारी सी डबल रोटी देख कर बहुत खुश हो गया। वह उसको अपने पिता के पास ले गया। वहॉ उसका पिता उसके भाइयों की लायी डबल रोटियॉ देख रहा था।

सबसे पहले उसने अपने सबसे बड़े बेटे के घर की बनी हुई डबल रोटी देखी। उसकी डबल रोटी चूल्हे की आग से बिल्कुल काली हो गयी थी और उसमें गुठलियॉ पड़ गयी थीं। उसने गुस्सा हो कर वह डबल रोटी रसोईघर में भेज दी।

फिर उसने अपने दूसरे बेटे की डबल रोटी देखी तो वह भी आग से जल कर काली हो गयी थी और उसमें भी गुठलियॉ पड़ गयी थीं। वह डबल रोटी भी उसने रसोईघर में भिजवा दी।

पर जब इवान ने अपनी डबल रोटी राजा को दी तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हो गया और उसके मुॅह से निकला — "यह है डबल रोटी जो शाही खाने की मेज की शान बढ़ायेगी।"

राजा ने उसी दिन शाम को एक दावत का इन्तजाम किया और अपने तीनों बेटों से उस दावत में अपनी अपनी पत्नियों को लाने के लिये कहा। वह देखना चाहता था कि उसकी तीनों बहुओं में से कौन सी बहू सबसे अच्छा नाचती थी।

एक बार फिर इवान महल से बहुत दुखी हो कर चला। वह सोचता जा रहा था कि आज तो वह गया। वह मेंढकी बेचारी कैसे नाचेगी।

जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुकुम सुना दिया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम दुखी न हो राजकुमार इवान। तुम शाम को ऐसा करना कि तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं तुम्हारे बाद में आऊॅगी।

जब तुम्हें बिजली की कड़क की आवाज सुनायी दे तो अपने मेहमानों से कहना कि तुम्हारी पत्नी अपनी गाड़ी में आ रही है।"

सो राजकुमार इवान उस दावत में अकेले ही चला गया जबकि उसके दोनों भाई अपनी अपनी पत्नियों के साथ आये थे। उनकी पत्नियों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहने पहन रखे थे।

राजा और रानी, उनके बेटे और उनकी पत्नियॉ और सब कुलीन मेहमान खाना खाने बैठे ही थे कि अचानक बाहर बिजली कड़की और सारा महल हिल गया। सब लोग घबरा गये।

इवान ने सब लोगों को शान्त किया — "घबराओ नहीं ओ भले लोगों। यह मेरी पत्नी है जो अपनी गाड़ी में आ रही है।"

तभी उसकी पत्नी अन्दर आयी। वह एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी थी। वह नीले रंग का गाउन पहने थी

जिस पर चॉदी के सितारे जड़े हुए थे और उसके सुनहरे बालों में आधा चॉद सजा हुआ था।

उसकी सुन्दरता को शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। राजकुमार इवान उसको देख कर बहुत खुश हो गया और वहॉ बैठे मेहमान भी उसको और उसके बढ़िया कपड़ों और गहनों के ही देखे जा रहे थे।

लोगों ने खाना खाना शुरू किया तो बड़े भाइयों की पत्नियों ने देखा कि मेंढकी राजकुमारी ने भुने हुए हंस[17] की हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में छिपा लीं और बची हुई शराब उसने बॉयी आस्तीन में छिपा ली। वे उसको देखती रहीं – हड्डियॉ एक आस्तीन में और शराब की कुछ बूँदें दूसरी आस्तीन में।

जब खाना खतम हो गया तो राजा ने नाच शुरू करने का हुकुम दिया। मेंढकी राजकुमारी ने नाचना शुरू किया। वह घूम घूम कर नाचती रही और मेहमान लोग पीछे हट कर उसका नाच देखते रहे।

जब उसने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से एक चमकती हुई झील निकल पड़ी और जब उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कई हंस निकल कर उस झील में तैरने लगे।

यह देख कर वहॉ बैठे सारे कुलीन मेहमानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

[17] Translated for the word “Swan”.

उसके बाद दोनों बड़े भाइयों की पत्नियों ने नाचना शुरू किया। जब उन्होंने अपना एक हाथ हिलाया तो उनकी भीगी हुई आस्तीन राजा के लाल चेहरे पर जा कर लगीं और जब दूसरा हाथ हिलाया तो दूसरी आस्तीन से हड्डियॉ निकल कर राजा की ऑख में जा पड़ीं।

यह देख कर राजा बहुत नाराज हुआ और नाच छोड़ कर चला गया। पर इस बीच राजकुमार इवान यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसकी पत्नी एक बहुत ही अक्लमन्द और सुन्दर राजकुमारी थी।

पर उसको डर भी लगा कि उसकी पत्नी कहीं फिर से मेंढकी में न बदल जाये सो वह महल से चुपचाप खिसक लिया और घर चला गया। वहॉ उसने उसकी मेंढक वाली खाल उठा कर आग में डाल दी।

जब उसकी पत्नी वापस आयी तो उसको घर में अपनी खाल नहीं मिली तो वह रो पड़ी और बोली — "ओह राजकुमार इवान, यह तुमने क्या किया? अगर तुमने केवल तीन दिन और इन्तजार किया होता तो हम लोग हमेशा के लिये खुशी खुशी रह रहे होते। अब हमको अलग होना पड़ेगा।

और अगर तुम मुझे ढूँढना भी चाहोगे तो तुमको "एक बीसी और नौ"[18] जमीन के भी आगे "भयानक पुरानी हड्डियों के राज्य"[19] में से हो कर जाना पड़ेगा।"

यह कह कर वह एक भूरे रंग की कोयल में बदल गयी और खिड़की से बाहर उड़ गयी।

एक साल गुजर गया और राजकुमार इवान अपनी पत्नी को ढूँढता रहा। जब दूसरा साल शुरू हुआ तो उसने अपने पिता से आशीर्वाद लिया और अपनी पत्नी को ढूँढने चल दिया।

यह तो पता नहीं कि इवान ऊपर चला या नीचे चला, दूर चला या पास चला क्योंकि मैंने सुना नहीं, बहुत समय तक चला या थोड़ी देर तक चला क्योंकि मैं इस बात का अन्दाजा भी नहीं लगा सका।

पर मुझे इतना पता है कि अपनी पत्नी को ढूँढते ढूँढते उसके जूते बहुत जल्दी ही टूट गये, उसके कपड़े फट गये और उसका चेहरा बहुत दुबला हो गया और वह पीला पड़ गया।

एक दिन जब उसने अपनी सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं और वह

जंगल के एक खुले हिस्से में घूम रहा था तो वहॉ उसको एक झोंपड़ी दिखायी दी जो मुर्गी की टॉगों पर खड़ी थी और बराबर घूमे जा रही थी।

[18] Translated for thr words "One Score and Nine"

[19] Translated for the words "Realm of Old Bones the Dread"

इवान बोला — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। मेहरबानी करके अपनी पीछे वाला हिस्सा तुम पेड़ों की तरफ कर लो और अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर लो।"

तुरन्त ही वह झोंपड़ी रुक गयी और उसमें अन्दर जाने के लिये एक दरवाजा खुल गया। इवान उस दरवाजे में से उस झोंपड़ी में घुसा। जैसे ही उसने उस झोंपड़ी के अन्दर पैर रखा तो उसको वहाँ एक बुढ़िया दिखायी दी।

उस बुढ़िया ने इवान से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

इवान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाते हुए जवाब दिया — "दादी माँ, मैं अपनी मेंढकी राजकुमारी को ढूँढ रहा हूँ।"

बाबा यागा ने अपना सिर ना में हिलाया और एक लम्बी सी साँस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने उस मेंढकी की खाल जलायी ही क्यों? क्योंकि वह मेंढकी "अक्लमन्द येलेना"[20] ही तो तुम्हारी मेंढकी पत्नी थी।

वह अपने ताकतवर पिता से भी बढ़ कर अक्लमन्द थी इसी लिये उसका पिता उससे इतना नाराज था कि उसने उसको उसकी चौदहवीं सालगिरह पर तीन साल के लिये मेंढकी में बदल दिया था।"

[20] Yelena – Yelena is a fairy in fairy tales of Russia. She is mentioned in "Firebird" story also published in this book.

राजकुमार इवान दुखी हो कर बोला — "लेकिन अभी मैं क्या करूँ दादी माँ, मैं उसको ढूँढने के लिये कुछ भी करूँगा।"

बाबा यागा आगे बोली — "अभी उसको भयानक पुरानी हड्डियों[21] ने अपने कब्जे में ले रखा है और वहाँ से उसको छुड़ाना आसान नहीं है क्योंकि आज तक उसको कोई मार नहीं सका है।

उसकी आत्मा एक सुई की नोक में है। वह सुई एक अंडे में है। वह अंडा एक बतख में है। वह बतख एक खरगोश में है। और वह खरगोश पत्थर के एक बक्से में है।

वह बक्सा एक ऊँचे से ओक के पेड़[22] के सबसे ऊपर रखा हुआ है और वह पुरानी हड्डी उसकी अपनी जान से भी ज़्यादा अच्छी तरह से रखवाली करता है।"

वह बूढ़ी जादूगरनी आगे बोली — "लो यह धागे का एक गोला ले जाओ। इसको तुम अपने सामने फेंक देना। फिर यह जिधर भी जाये तुम इसके पीछे पीछे चले जाना। यह तुमको रास्ता दिखायेगा।"

बाबा यागा को उसकी सहायता के लिये धन्यवाद दे कर इवान ने धागे का वह गोला अपने सामने फेंक दिया और जंगल में उसके पीछे पीछे चलने लगा।

[21] Translated for the words "Old Bones" – name of the giant who had captured the frog princess.
[22] Oak tree is a very large shady tree.

इवान चलता गया चलता गया और एक साफ खाली जगह आ निकला। वहॉ उसको एक बड़ा कत्थई रंग का भालू मिल गया। वह उस भालू के ऊपर तीर चलाने ही वाला था कि वह भालू उससे आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार को उस भालू पर दया आ गयी। उसने उसको छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जा कर उसको अपने ऊपर उड़ता हुआ एक सफेद नर बतख[23] मिला।

वह उसको भी अपने तीर से मारना चाहता था कि वह नर बतख भी आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।" राजकुमार ने उसकी ज़िन्दगी भी बख्श दी और आगे बढ़ गया।

उसी समय एक भेंगा खरगोश उसका रास्ता काटता हुआ वहॉ से गुजर गया। राजकुमार ने जल्दी से अपना निशाना साधा और उसको तीर मारने ही वाला था कि वह खरगोश भी आदमी आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

[23] Translated for the word "Drake"

राजकुमार ने उसकी भी ज़िन्दगी बख्श दी और अपने धागे के गोले के पीछे पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक झील के पास आया तो झील के किनारे पर उसको एक पाइक मछली[24] पड़ी हुई मिली। वह हवा के लिये तरस रही थी उसको हवा की जरूरत थी।

वह मछली बोली — "मुझ पर दया करो राजकुमार इवान। मुझे इस झील में फेंक दो क्योंकि एक दिन तुमको मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार इवान ने उस मछली को झील में फेंक दिया और फिर अपने धागे के गोले के पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

काफी शाम हो जाने के बाद वह एक ओक के पेड़ के पास आया जो बहुत ऊॅचा और मजबूत था। उस पेड़ की सबसे ऊॅची शाखाओं पर पत्थर का एक बक्सा रखा था जिस तक पहुॅचना ही नामुमकिन सा था।

इवान अभी यह सोच ही रहा था कि वह उस बक्से को नीचे कैसे ले कर आये कि कहीं से वह कत्थई भालू वहॉ आ गया। उसने अपने मजबूत हाथों से उस पेड़ का तना पकड़ कर उसको जड़ से उखाड़ लिया।

उसके ऊपर रखा बक्सा नीचे गिर कर टूट गया और उसमें से एक खरगोश निकल कर तेज़ी से भाग गया।

[24] Pike fish is a large size fish

तभी वह भेंगा खरगोश वहॉ आ गया। उसने उसका पीछा किया और उसको पकड़ कर फाड़ डाला। जैसे ही उस भेंगे खरगोश ने उस खरगोश को फाड़ा उसमे से एक बतख निकल कर ऊपर आसमान में उड़ गयी।

पल भर में ही सफेद नर बतख जिसकी ज़िन्दगी इवान ने बख्शी थी उसके ऊपर था और उसने उस बतख को इतनी ज़ोर से मारा कि उसमें से उसका अंडा निकल पड़ा। अंडा ऊपर से गिरा तो झील में गिरा।

यह देख कर तो इवान रो पड़ा। उस झील में अब वह उस अंडे को कैसे ढूँढेगा?

पर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पाइक मछली उस अंडे को लिये हुए किनारे पर तैरती चली आ रही है। राजकुमार ने तुरन्त ही उस अंडे को तोड़ा और उसमें सुई को ढूँढा। उसमें से सुई निकाल कर उसने उसको मोड़ना शुरू किया।

जितना ज़्यादा वह राजकुमार उस सुई को मोड़ता जाता था वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी अपने काले पत्थर के महल में बैठा उतना ही ज़्यादा ऐंठता जाता था और बल खाता जाता था।

आखिर उसने वह सुई तोड़ दी और उस सुई के टूटते ही वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी मर गया।

जैसे ही राजकुमार ने सोचा कि अब वह राजकुमारी को ले कर आये तो उसके सामने तो राजकुमारी येलेना खुद ही खड़ी थी।

वह एक लम्बी सी सॉस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने यहॉ आने में कितनी देर लगा दी मैं तो इस भयानक पुरानी हड्डियॉ से शादी करने वाली थी। इसने मुझे अपने काबू में कर रखा था।"

आखीर में दोनों मिल गये और रूस वापस लौट गये। वहॉ वे फिर बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

2 ज़ारेवना मेंढकी[25]

मेंढकी राजकुमारी जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी भी एशिया महाद्वीप के रूस देश की कहानियों से ली गयी है।

पुराने ज़ार के राज्य में, मुझे मालूम नहीं कब, एक राजा अपनी पत्नी राजकुमारी के साथ रहा करता था। उनके तीन बेटे थे तीनों नौजवान थे तीनों बहादुर थे इतने कि कोई उनकी बहादुरी का वर्णन नहीं कर सकता था।

उन तीनों में से जो सबसे छोटा राजकुमार था उसका नाम था इवान ज़ारेविच[26]। एक दिन उनके पिता ने उनसे कहा कि — "मेरे प्यारे बच्चों तुम लोग अपने अपने तीर कमान लो, अपने मजबूत कमान की डोरी खींचो और अपने तीरों को जाने दो। जिसके ऑगन में तुम्हारा तीर जा कर पड़ेगा उसी घर की लड़की से तुम्हारी शादी कर दी जायेगी।

सबसे बड़े ज़ारेविच का तीर एक बोयर[27] के घर में जा कर पड़ा जहॉ स्त्रियॉ रहती थीं। दूसरे ज़ारेविच का तीर एक बहुत ही अमीर

---

[25] The Tsarevna Frog – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap01.htm
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.
Tsarevna or Tzarevna means princess.
This tale is like its previous tale but with a little twist.

[26] Tsarevich or Tzarevich means Prince

[27] Boyar means a member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince.

सौदागर के लाल छज्जे पर जा कर पड़ा जहाँ एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी थी।

सबसे छोटे ज़ारेविच इवान का तीर बदकिस्मती से एक दलदल में जा कर पड़ा जहाँ उसे एक टर्राती हुई मेंढकी ने पकड़ लिया।

इवान ज़ारेविच अपने पिता के पास आया और वोला — "पिता जी मैं एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता हूँ। क्या वह मेरे बराबर की है? नहीं पिता जी निश्चित रूप से वह मेरे बराबर की नहीं है।"

पिता ने कहा — "चिन्ता मत करो। तुमको तो अब मेंढकी से ही शादी करनी पड़ेगी क्योंकि ऐसा लगता है कि यही तुम्हारी किस्मत है।"

इस तरह तीनों भाइयों की शादी कर दी गयी। सबसे बड़े बेटे की बोयर की वेटी से दूसरे बेटे की अमीर सौदागर की बेटी से और सबसे छोटे बेटे इवान की एक मेंढकी से।

कुछ समय वाद राज्य के राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "अपनी अपनी पत्नियों से कहो कि वे कल सुबह को मेरे लिये एक डबल रोटी बना कर रखें।"

इवान घर लौटा तो उसके चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं थी और उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं।

मेंढकी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या आज महल में कोई खराब बात हो गयी है?"

इवान ज़ारेविच बोला — "हॉ खराब बात ही तो हो गयी है। मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम कल सुबह को उनके लिये एक डबल रोटी बनाओ।"

"ज़ारेविच तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। तुम आराम से जा कर सोओ। सुबह का समय काली शाम के समय से ज़्यादा अच्छा सलाहकार होता है।"

अपनी पत्नी की सलाह मान कर ज़ारेविच सोने चला गया। ज़ारेविच के जाने के बाद मेंढकी ने अपनी मेंढकी वाली खाल निकाल दी और अब वह एक बहुत सुन्दर लड़की बन गयी थी। उसका नाम था वासिलीसा।

वह घर के बाहर निकली और उसने आवाज लगायी — "ओ मेरी आयाओ और नौकरानियों तुरन्त आओ और मेरे लिये कल सुबह के लिये एक सफेद डबल रोटी बनाओ। बिल्कुल ऐसी ही डबल रोटी जैसी मैं अपने पिता के शाही महल में खाया करती थी।"

सुबह को जब इवान ज़ारेविच मुर्गे की बॉग के साथ सो कर उठा, और यह तो तुमको मालूम ही है कि मुर्गे कभी अपनी बॉग लगाने में देर नहीं करते तो उसकी डबल रोटी तैयार थी।

वह डबल रोटी इतनी बढ़िया थी कि उसका वर्णन करना मुश्किल था। क्योंकि ऐसी डबल रोटियॉ तो केवल परियों के देश में हीं मिलती हैं। वह दोनों तरफ बहुत सुन्दर सुन्दर मूर्तियों और शहरों और किलों से सजी हुई थी और अन्दर वह बरफ की तरह से सफेद और पंखों की तरह मुलायम थी।

पिता ज़ार उसको देख कर बहुत खुश हुआ और ज़ारेविच को खास धन्यवाद मिला।

ज़ार फिर मुस्कुराते हुए बोला — "अब एक दूसरा काम और है। तुम सब अपनी अपनी पत्नियों से मुझे कल सुबह तक एक एक कालीन[28] बना कर दो।"

ज़ारेविच इवान फिर मुँह लटकाये हुए घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या तुम्हारे पिता उस डबल रोटी को देख कर खुश नहीं हुए?"

इवान ज़ारेविच बोला — "नहीं उससे तो वह बहुत खुश थे पर अब मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम उनके लिये कल सुबह तक एक कालीन बनाओ।"

"तुम चिन्ता न करो ज़ारेविच और सोने जाओ। सुबह का समय हमारी जरूर ही सहायता करेगा।"

[28] Translated for the word "Rug", not the carpet. Rug is a floor covering of thick woven material

यह सुन कर ज़ारेविच इवान सोने चला गया। मेंढकी फिर से वासिलीसा में बदली और बाहर आ कर ज़ोर से आवाज लगायी — "ओ मेरी प्यारी आयाओ और वफादार नौकरानियों, अबकी बार तुम मेरे पास मेरे एक नये काम के लिये आओ। और मेरे लिये एक ऐसा रेशम का कालीन बनाओ जैसे कालीन पर मैं अपने पिता राजा के महल में बैठा करती थी।"

जैसे ही वासिलीसा ने यह कहा कि तुरन्त ही उन्होंने उसके लिये रेशम का कालीन बना दिया।

सुबह को जब मुर्गों ने बाँग दी तब ज़ारेविच इवान जागा और लो वहाँ तो दुनियाँ का सबसे सुन्दर रेशम का कालीन रखा हुआ था। एक ऐसा कालीन जिसका कोई वर्णन नहीं कर सकता था।

उस कालीन में चमकीले रेशम के तारों के बीच सोने चाँदी के तार भी बुने हुए थे। और वह कालीन तो बस सिवाय तारीफ के और किसी काबिल था ही नहीं।

ज़ार पिता उस कालीन को देख कर बहुत खुश था और अपने बेटे को इतने सुन्दर कालीन के लिये बहुत धन्यवाद दिया। इसके बाद उसने एक नया हुकुम जारी किया।

अबकी बार वह अपने सुन्दर बेटों की सुन्दर पत्नियों को देखना चाहता था। और इसके लिये उनको उन्हें अगले दिन पेश करना था।

"टर्र टर्र। प्रिय ज़ारेविच, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या किसी ने तुमको महल में कोई बुरी बात कह दी है?"

"हॉ बुरी बात तो कह दी है। मेरे पिता ज़ार ने हम सबको यह हुकुम दिया है कि हम तीनों अपनी अपनी पत्नियों को उनके सामने ले जा कर पेश करें। अब बताओ कि मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकता हूँ।"

मेंढकी धीरे से टर्रायी और बोली — "यह कोई बहुत बुरा तो नहीं हो सकता पर उससे बुरा भी हो सकता था। ऐसा करो कि तुम अकेले ही जाओ और मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।

जब तुम ज़ोर की आवाज सुनो तो तुम उससे डर मत जाना बस यही कहना "एक बदकिस्मत मेंढकी एक बदकिस्मत बक्से में आ रही है।"

इवान राजी हो गया हालॉकि उसकी समझ में कुछ नहीं आया। ज़ार के महल में उसके दोनों बड़े भाई अपनी अपनी सुन्दर चमकती हुई खुश खुश बढ़िया कपड़े पहने पत्नियों के साथ पहले आये।

दोनों ने आ कर इवान ज़ारेविच का बहुत मजाक बनाया क्योंकि वह तो अकेला ही आया था।

उन्होंने उससे हॅसते हुए पूछा — "भाई तुम अकेले क्यों आये हो? अपनी पत्नी को साथ ले कर क्यों नहीं आये? क्या तुम्हारे पास उसको ढकने के लिये कोई फटा कपड़ा भी नहीं था? तुम्हें ऐसी सुन्दरता मिल भी कहॉ सकती थी?

हम इस बात की शर्त लगाते हैं कि उसके पिता के पूरे दलदल के राज्य में ऐसी सुन्दरता कोई दूसरी नहीं होगी।"

और फिर वे हॅसते रहे हॅसते रहे।

और फिर एक बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। सारा महल कॉप गया वहॉ बैठे सारे मेहमान डर गये। अकेला ज़ारेविच शान्त खड़ा रहा फिर बोला — "डरने की कोई बात नहीं है। मेरी मेंढकी अपने बक्से में आ रही है।"

सबने देखा कि लाल पोर्च में छह सफेद घोड़ों से जुती हुई एक उड़ने वाली सुनहरी गाड़ी रुकी और उसमें से सुन्दर वासिलीसा ने अपना हाथ अपने पति की तरफ बढ़ाया।

इवान उसका हाथ पकड़ कर उसको ओक की लकड़ी की बनी हुई भारी भारी मेजों की तरफ ले गया जिन पर बरफ की तरह से सफेद मेजपोश बिछे हुए थे और जिन पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे जो केवल परियों के देश में ही मिलते थे और वहीं खाये जाते थे। मेहमान लोग भी वहॉ खुशी से खाना खा रहे थे और बात कर रहे थे।

वासिलीसा ने गिलास में से थोड़ी सी शराब पी और जो बाकी बची वह उसने अपनी बॉयी आस्तीन में डाल ली। फिर उसने तले हुए हंस के कुछ टुकड़े खाये और उनकी हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में डाल लीं। दोनों बड़े भाइयों की पत्नी ने यह देख लिया तो उन्होंने भी उसकी नकल करते हुए वैसा ही किया।

जब खाना खत्म हो गया तो सब लोग नाचने के लिये उठे। सुन्दर वासिलीसा जो वहॉ एक चमकता तारा लग रही थी सबसे पहले आगे आयी। पहले वह अपने राजा ज़ार के सामने झुकी फिर उसने मेहमानों के सामने सिर झुकाया उसके बाद अपने खुश पति ज़ारेविच इवान के साथ नाचने लगी।

नाचते समय वासिलीसा ने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कमरे के बीच में एक झील प्रगट हो गयी जिससे वहॉ की हवा ठंडी हो गयी। फिर उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से सफेद हंस निकल कर झील के पानी में तैरने लगे।

ज़ार, वहॉ बैठे मेहमान, नौकर, यहॉ तक कि भूरी बिल्ली भी जो वहॉ एक कोने में बैठी थी वह भी सुन्दर वासिलीसा की सुन्दरता को देख कर हैरान रह गये।

इवान के दोनों बड़े भाइयों की पत्नियॉ तो उसको देख कर बहुत ही जल रही थीं। जब उनके नाचने की बारी आयी तो उन्होंने भी अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी जैसे वासिलीसा ने हिलायी थी तो उन्होंने तो सारी तरफ शराब फैला दी।

उसके बाद उन्होंने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से बजाय हंसों के उनकी हड्डियॉ निकल कर पिता ज़ार के चेहरे पर जा पड़ीं। इससे पिता ज़ार बहुत गुस्सा हो गया और उसने उनको महल के बाहर निकाल दिया।

इस बीच इवान ज़ारेविच एक पल तो इधर उधर देखता रहा फिर वह वहाँ से किसी तरह बिना किसी के देखे निकल गया। वह तुरन्त अपने घर गया, अपनी पत्नी की मेंढकी की खाल ढूँढी और उसको आग में डाल कर जला दिया।

जब वासिलीसा घर वापस आयी तो अपनी खाल ढूँढने लगी पर वह उसको मिली नहीं तो वह बहुत दुखी हो गयी और उसकी आँखों में आँसू आ गये।

उसने अपने पति ज़ारेविच इवान से कहा — "ओ प्रिय ज़ारेविच, यह तुमने क्या किया। अब तो मेरे लिये इस मेंढक की बदसूरत खाल पहनने का बहुत थोड़ा सा ही समय बाकी रह गया था। वह समय पास ही था जब हम हमेशा के लिये एक साथ खुशी खुशी रहते। पर अब तुम्हें मुझे एक दूर देश में ढूँढना पड़ेगा जिसका रास्ता कोई नहीं जानता – अमर कोशची[29] के महल का रास्ता।"

इतना कह कर वह एक सफेद हंस में बदल गयी और खिड़की के रास्ते उड़ गयी। ज़ारेविच इवान तो यह देख सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़ा। फिर उसने भगवान से प्रार्थना की उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम की तरफ क्रास बनाया और किसी अनजाने सफर पर निकल पड़ा।

कोई नहीं जानता कि यह सफर कितना लम्बा था पर चलते चलते एक दिन वह एक बूढ़े से मिला। उसने बूढ़े को सिर झुकाया

[29] Koschie the Deathless – a villain in Russian folklores

तो बूढ़ा बोला — "गुड डे ओ बहादुर नौजवान। तू क्या ढूँढ रहा है और किधर जा रहा है?"

ज़ारेविच इवान ने उसको बिना कुछ छिपाये हुए अपनी बदकिस्मती के बारे में सब सच सच बता दिया।

तो बूढ़े ने पूछा — "तो तूने उसकी वह मेंढकी वाली खाल जलायी ही क्यों? यह तूने कितना गलत काम किया।

अब तू मेरी बात सुन। वासिलीसा अपने पिता से भी ज़्यादा अक्लमन्द पैदा हुई थी। वह अपनी बेटी की अक्लमन्दी से बहुत जलता था इसलिये उसने अपनी बेटी को तीन साल तक मेंढकी बने रहने का शाप दे दिया।

पर मुझे तुझ पर दया आती है और मैं तेरी सहायता करना चाहता हूँ। ले यह एक जादू की गेंद ले। इस गेंद को अपने सामने फेंक देना और जिस तरफ यह जाये तू भी इसके पीछे पीछे चले जाना।"

ज़ारेविच इवान ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसकी दी हुई गेंद अपने सामने फेंक दी। अब जिधर को भी वह गेंद चली वह उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह चलता गया चलता गया। चलते चलते वह एक फूलों वाले मैदान में निकल आया। वहाँ उसको एक भालू मिला, एक रूसी भालू।

इवान ज़ारेविच ने अपन तीर कमान लिया और उसको मारने ही वाला था कि भालू बोला — "ओ दयालु ज़ारेविच मुझे मत मारो। कौन जानता है कि किसी दिन मैं तुम्हारे काम आ जाऊँ।" इवान ने उस भालू को छोड़ दिया।

वहाँ पर धूप में एक बतख उड़ी जा रही थी, एक सफेद प्यारी सी बतख। ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये एक बार फिर अपना तीर कमान उठाया कि वह बतख भी बोल पड़ी — "ओ भले ज़ारेविच मुझे मत मारो। मैं किसी दिन तुम्हारे काम जरूर आऊँगी।"

सो इवान ने उसको भी छोड़ दिया और आगे चल दिया। आगे चल कर उसको एक बड़ा खरगोश[30] मिला तो ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये फिर से अपना तीर कमान निकाला कि तभी उसने कहा — "मुझे मत मारो ओ बहादुर ज़ारेविच मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारी सहायता करूँगा।"

सो इवान ज़ारेविच ने उस बड़े खरगोश को भी छोड़ दिया। अब वह फिर आगे चला तो वह एक समुद्र के किनारे आ गया।

[30] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal, but a little bigger than rabbit – see its picture above.

उस समुद्र के किनारे पर रेत में एक मछली पड़ी तड़प रही थी। मुझे उस मछली का नाम तो नहीं मालूम पर वह एक बहुत बड़ी मछली थी और उस रेत पर पड़ी पड़ी मरने वाली हो रही थी।

मछली इवान से बोली — "ओ ज़ारेविच इवान मेरे ऊपर दया करो मुझे इस समुद्र के ठंडे पानी में फेंक दो।" ज़ारेविच इवान ने ऐसा ही किया और समुद्र के किनारे किनारे आगे चल दिया।

इवान के आगे चलती चलती गेंद इवान को एक झोंपड़ी के पास ले आयी। यह एक अजीब सी छोटी सी झोंपड़ी थी जो एक छोटी सी मुर्गी की टॉगों पर खड़ी हुई थी

इवान उसको देख कर बोला — "इज़बूष्का इज़बूष्का।" रूसी भाषा में इसका मतलब होता है छोटी झोंपड़ी। "इज़बूष्का मैं चाहता हूॅ कि तू अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर ले।"

और लो उस झोंपड़ी ने तो अपना सामने का हिस्सा इवान के सामने कर लिया। इवान उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें तो एक जादूगरनी बैठी हुई है। वह जादूगरनी तो इतनी बदसूरत थी कि उसने इससे पहले कभी इतना बदसूरत कोई देखा नहीं था।

उस जादूगरनी ने उसको देखते ही पूछा — "ओ इवान ज़ारेविच तुम यहॉ क्यों आये हो?"

इवान गुस्से से चिल्ला कर बोला — "ओ बूढ़ी बुरा करने वाली, क्या रूस ने तुझे एक थके हुए मेहमान से इसी तरीके से सवाल करना सिखाया है? बजाय इसके कि तू उसको कुछ खाने को दे, कुछ पीने को दे, हाथ मुँह धोने के लिये थोड़ा सा गरम पानी दे। तू उससे ऐसा सवाल कर रही है?"

वह जादूगरनी बाबा यागा[31] थी। तब बाबा यागा ने ज़ारेविच को बहुत सारा खाना दिया बहुत सारा पीने को दिया और मुँह हाथ धोने के लिये गरम पानी दिया। ज़ारेविच इवान यह सब करके ताजा हुआ।

जल्दी ही वह बात करने के लायक हो गया तो उसने उसको अपनी शादी की अजीब कहानी सुनायी। उसने उसे बताया कि कैसे उसकी पत्नी उससे खो गयी थी और अब उसकी बस एक ही इच्छा थी और वह थी उसको पाना।

जादूगरनी बोली — "मुझे सब मालूम है। आजकल वह अमर कोशची के महल में है। और तुम्हें यह पता होना चाहिये कि वह एक बहुत ही भयानक आदमी है।

वह उसकी दिन रात रखवाली करता है और कोई भी उसे कभी भी नहीं जीत सकता। उसकी मौत एक जादू की सुई में है। वह सुई

[31] Baba Yaga is one of the main evil characters of Russian folklores. Of course in this folktale she helps the Prince.

एक बड़े खरगोश के अन्दर है वह खरगोश एक बड़े बक्से के अन्दर है। वह बक्सा ओक के पेड़ की डालियों के बीच छिपा हुआ है।

और वासिलीसा की तरह कोशची इस ओक के पेड़ की भी दिन रात रखवाली करता है। इसका मतलब है कि किसी भी खजाने से ज़्यादा।"

तब जादूगरनी ने इवान ज़ारेविच को बताया कि वह ओक का पेड़ उसे कहॉ मिलेगा। सुनते ही इवान उधर की तरफ चल दिया। पर जब उसने ओक का पेड़ देखा तो वह बड़ा नाउम्मीद हुआ। उसे समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे और अपना काम कहॉ से शुरू करे।

लो तभी उसका जानने वाला रूसी भालू वहॉ आ गया। वह पेड़ के पास पहुॅचा और उसको जड़ से उखाड़ दिया।

जड़ से उखड़ते ही वह पेड़ नीचे गिर पड़ा और उस पर रखा बक्सा भी नीचे गिर गया। नीचे गिरते ही वह बक्सा टूट गया। बक्से के टूटते ही उसमें एक बड़ा खरगोश निकल कर भाग गया।

तभी इवान ने देखा कि उसका दोस्त बड़ा खरगोश कहीं से आया और उसके पीछे पीछे भागा। इवान वाले बड़े खरगोश ने कोश्ची वाले बड़े खरगोश को तुरन्त ही पकड़ लिया और उसे फाड़ दिया।

खरगोश के फटते ही उसमें से एक भूरी बतख निकल कर भागी और आसमान में बहुत ऊॅची उड़ गयी और गायब हो गयी।

पर इवान की सुन्दर सफेद बतख ने उसका पीछा किया और उसको मार दिया।

उसके मरते ही उसमें से एक अंडा निकल पड़ा और वह अंडा समुद्र के नीले पानी में गिर पड़ा। यह देख कर तो ज़ारेविच की जान ही निकल गयी। अब वह उसमें से सुई कैसे निकालेगा कैसे वह कोशची को मारेगा और फिर कैसे अपनी सुन्दर बासिलीसा को हासिल करेगा।

कि तभी उसने देखा कि वह बड़ी वाली मछली जिसको उसने समुद्र में फेंका था समुद्र में से बतख का अंडा लिये चली आ रही है। उसने अंडा ला कर समुद्र के किनारे की रेत पर फेंक दिया। इवान ज़ारेविच ने तुरन्त वह अंडा उठाया और उसे तोड़ कर उसमें से सुई निकाल ली जिस पर कोशची की ज़िन्दगी निर्भर थी।

उसी समय कोशची की सारी ताकत हमेशा के लिये जाती रही। इवान ज़ारेविच उस सुई को ले कर उसके राज्य में घुस गया और उसको उस जादुई सुई से मार दिया। उसके एक महल में उसको सुन्दर वासिलीसा भी मिल गयी।

वह उसको ले कर घर आ गया और फिर वे खुशी खुशी बहुत दिनों तक रहे।

3 मेंढक की खाल[32]

मेंढक राजकुमारी जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक जगह तीन भाई रहते थे। वे शादी करना चाहते थे तो उन्होंने आपस में कहा — "चलो हम लोग अपना अपना तीर चलाते हैं और जहाँ जिसका तीर जा कर पड़ेगा उसको उसी की बेटी से शादी करनी होगी।"

तीनों को शादी करने का यह जुआ बहुत पसन्द आया सो तीनों ने अपने अपने तीर चलाये। दोनों बड़े भाइयों के तीर तो कुलीन लोगों के घरों जा कर पड़े पर सबसे छोटे भाई का तीर एक झील में जा कर पड़ा।

सो दोनों बड़े भाइयों की शादी तो उन कुलीन लोगों की बेटियों से हो गयी पर सबसे छोटे भाई को झील के किनारे जाना पड़ा। जैसे ही वह झील के किनारे पहुँचा कि एक मेंढकी झील में से बाहर निकल कर आयी और बाहर आ कर एक पत्थर पर बैठ गयी। उसके मुँह में उसका तीर था।

छोटे भाई ने मेंढकी को उठाया और उसे घर ले आया। इस तरह तीनों भाई अपनी अपनी किस्मत को ले कर घर आये – दोनों

[32] Frog's Skin (Tale No 4) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

बड़े भाई कुलीन परिवार की बेटियों के साथ और सबसे छोटा भाई एक मेंढकी के साथ।

भाई लोग बाहर काम पर चले जाते और उनकी पत्नियॉ उनके पीछे उनका घर सॅभालतीं। उनके लिये खाना बनातीं और घर के दूसरे कामों की देखभाल करतीं। पर मेंढकी एक तरफ को बैठी बैठी टर्र टर्र करती रहती और उसकी ऑखें चमकती रहतीं।

इस तरह वे प्रेम से एक साथ मिल कर बहुत दिनों तक रहे। पर दोनों बड़ी बहुऐं उस मेंढकी को देखते देखते थक गयीं। एक दिन जब उन्होंने घर की सफाई की तो उन्होंने कूड़े के साथ साथ उस मेंढकी को भी बाहर फेंक दिया।

अगर सबसे छोटे भाई ने उसे देख लिया होता तो वह उसको हाथ में उठा लेता और अगर नहीं देखता तो वह मेंढकी अपनी पुरानी जगह आग के पास जा कर बैठ जाती और फिर से टर्र टर्र करती रहती।

कुलीन बहुओं को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा तो उन्होंने अपने अपने पतियों से इसकी शिकायत की — "इस मेंढकी को बाहर निकालो और अपने भाई के लिये कोई असली पत्नी ले कर आओ। यह कोई तरीका नहीं है।"

सो रोज दोनों बड़े भाई अपने छोटे भाई से कहते कि वह कोई असली पत्नी ले कर आये। और वह हमेशा यही जवाब देता —

"शायद यह मेंढकी ही मेरी किस्मत है भैया। इससे अच्छी चीज़ मेरी किस्मत में है ही नहीं। मुझे इसी का वफादार रहना चाहिये।"

इस जवाब को सुन कर दोनों बड़ी बहुओं ने कहा कि अगर यह कोई असली पत्नी नहीं लाता तो इन दोनों को घर से कहीं और भेज देना चाहिये। हम इस तरह से एक मेंढकी के साथ नहीं रह सकते। आखिर दोनों बड़े भाई ऐसा करने पर राजी हो गये।

अब छोटा भाई बिल्कुल अकेला रह गया था। उसका खाना बनाने वाला कोई नहीं था। जब वह काम से लौट कर आता तो कोई उसका दरवाजे पर खड़ा इन्तजार करता नहीं होता।

कुछ समय के लिये एक पड़ोसन घर में उसका इन्तजार करती पर फिर उसके पास भी समय नहीं रहा सो वह फिर अकेला पड़ गया। अब वह बहुत दुखी रहने लगा।

एक बार जब वह बड़े दुखी मन से अपने अकेलेपन के बारे में सोच रहा था तब वह काम पर गया। जब उसका काम खत्म हो गया तो वह अपने घर चला आया।

घर जा कर उसने अपना घर देखा तो वह तो उसे देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसके खाने के कमरे की आलमारी भरी हुई थी। मेज पर बहुत सुन्दर मेजपोश बिछा हुआ था जिस पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे।

उसने इधर उधर देखा तो एक कोने में मेंढकी को बैठे टर्र टर्र करते पाया। यह देख कर उसने सोचा कि शायद यह सब उसकी

भाभियॉ उसके लिये कर गयी होंगी। वह खाना खा कर फिर से अपने काम पर चला गया।

सारा दिन बाहर काम करने के बाद जब वह शाम को घर आता तो वह रोज ही अपने लिये ऐसी सब चीज़ें तैयार पाता।

एक बार उसने सोचा "मैं एक बार देखना चाहता हूॅ कि यह कौन भला आदमी है जो मेरे लिये इतना अच्छा कर रहा है और मेरा इतना खयाल रख रहा है। सो उस दिन वह घर पर ही रहा। वह घर की छत पर जा कर बैठ गया और देखता रहा कि घर में क्या होता है।

कुछ देर बाद उसने देखा कि मेंढकी आग जलाने की जगह से उठी और दरवाजे की तरफ कूदी और कमरे में चारों तरफ घूमी। फिर यह देखने के बाद कि वहॉ कोई नहीं है वह वापस चली गयी और उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार कर आग के पास रख दी।

अब क्या था उसके अन्दर से तो एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी – सूरज की तरह से चमकती हुई। इतनी सुन्दर कि वह लड़का उससे ज़्यादा सुन्दर लड़की के बारे में सोच ही नहीं सका।

पलक झपकने में ही उसने सारी सफाई कर दी और खाना बना कर तैयार कर दिया। जब उसका काम खत्म हो गया तो वह फिर

से आग के पास गयी अपनी खाल ओढ़ी और फिर से टर्र टर्र करने लगी।

जब उस लड़के ने यह देखा तो वह तो बड़े आश्चर्य में पड़ गया। वह तो बहुत खुश हो गया और भगवान को धन्यवाद दिया कि उसने उसको इतनी खुशी दी। वह छत से नीचे उतर आया घर के अन्दर गया मेंढकी को बड़े प्यार से सहलाया और फिर अपना खाना खाने बैठ गया।

अगले दिन वह फिर से उसी जगह छिप कर बैठ गया जहॉ वह पिछले दिन छिप कर बैठा था। मेंढकी ने फिर इधर देखा उधर देखा और जब उसने देखा कि वहॉ कोई नहीं है तो उसने अपनी खाल उतारी और अपना काम करना शुरू कर दिया।

इस बार वह लड़का उसी समय चुपचाप घर में घुसा और अपनी मेंढकी पत्नी की खाल उठायी और उसको आग में फेंक दी। जब उस लड़की ने यह देखा तो उसने उसको बहुत बुरा भला कहा और फिर रो पड़ी और कहा — "तुम इस खाल को मत जलाओ नहीं तो तुम यकीनन ही बहुत परेशान हो जाओगे।"

पर वह खाल तो उस लड़के के आग में डालते ही जल गयी। लड़की ने दुखी हो कर कहा — "अब तुम्हारी खुशी दुख में बदल जाये तो इसके लिये मुझे जिम्मेदार मत ठहराना।।"

बहुत जल्दी ही सारे गॉव वालों को पता चल गया कि वह लड़का जिसके पास मेंढकी थी उसके पास अब उसकी जगह एक बहुत सुन्दर लड़की आ गयी है जो उसके पास स्वर्ग से आयी है।

उस देश के राजा ने जब यह सुना तो उसने चाहा कि उस लड़की को उससे वह ले ले। उसने उस लड़के को अपने पास बुलाया और कहा — "या तो तुम मेरे लिये एक भंडार भर कर गेंहू का खेत एक ही दिन में खोदो और उसमें बीज बोओ या फिर अपनी पत्नी मुझे दे दो।"

जब राजा ने उससे यह कहा तो उसको उसकी बात पर राजी होना पड़ा। वह दुखी हो कर घर चला गया।

घर जा कर उसने यह सब अपनी पत्नी से कहा। उसने उसको फिर बुरा भला कहा और बोली — "मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि अगर तुमने मेरी खाल जला दी तो क्या होने वाला है पर तुमने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया।

पर इस बात के लिये मैं तुमको गलत नहीं ठहराऊँगी। तुम दुखी मत हो। तुम सुबह उसी झील के किनारे जाना जहॉ से तुमने मुझे उठाया था और वहॉ जा कर कहना — "ओ माता और पिता, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आप अपने सबसे ज़्यादा तेज़ काम करने वाले बैल दे दें।"

तो वे तुमको बैल दे देंगे। तुम उन बैलों को ले कर आ जाना वे बैल तुम्हें एक दिन में ही एक भंडार भर कर गेंहू का खेत खोद कर और उसमें बीज बो कर दे देंगे।"

उसके पति ने ऐसा ही किया। वह उसी झील के किनारे गया और वहाँ जा कर पुकारा — "ओ माता और पिता, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आप अपने सबसे तेज़ काम करने वाले बैल दे दें।"

अब उस झील में से तो बैलों का एक इतना बड़ा झुंड निकल कर आया कि जैसा कि समुद्र या धरती कहीं पर कभी देखा नहीं गया था। वह लड़का उन बैलों को हाँक कर राजा के खेतों मे ले गया। उन्होंने राजा के खेतों में एक ही दिन में हल चला दिया और उनमें बीज बो दिया।

राजा तो यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ। वह नहीं जानता था कि जिस आदमी की पत्नी वह लेना चाहता था उस आदमी के लिये कोई भी काम नामुमकिन था।

फिर भी उसने उसको दोबारा बुलाया और कहा — "जाओ उस खेत से सारा गेंहू इकट्ठा कर लाओ जो तुमने बोया था। गेंहू का एक दाना भी खेत में नहीं रहना चाहिये और मेरा भंडारघर पूरा भर जाना चाहिये। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम्हारी पत्नी मेरी हो जायेगी।"

लड़के ने सोचा "यह काम तो बिल्कुल नामुमकिन सा लगता है।" पर फिर भी वह अपने घर की तरफ चल दिया। और जब आ कर उसने अपनी पत्नी को सब बताया तो उसकी पत्नी ने उसको फिर डॉटा।

पर फिर बोली — "जाओ तुम अब उसी झील के किनारे फिर जाओ और वहॉ जा कर उनसे जैकडौ चिड़िया[33] मॉगना।"

वह लड़का फिर उसी झील के किनारे गया और बोला — "ओ माता और पिता मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि मुझे अबकी बार आप जैकडौ चिड़िया दीजिये।"

तुरन्त ही झील में से बहुत सारी जैकडौ चिड़ियें आ गयीं। वे तुरन्त ही जोते हुए खेत की तरफ उड़ गयीं और उन्होंने वहॉ से गेहूॅ के सब दाने बीन कर राजा के भंडारघर में भर दिये।

राजा आया और चिल्लाया — "इसमें एक दाना कम है। मुझे हर दाने का पता है। इसमें एक दाना कम है।"

उसी समय एक जैकडौ की कॉव कॉव सुनायी दी और वह अपनी चोंच में गेंहूॅ का एक दाना दबाये वहॉ आ गया। असल में वह लंगड़ा था सो उसको आने में कुछ देर हो गयी।

यह देख कर तो राजा बहुत गुस्सा हो गया कि इतना नामुमकिन काम भी इसके लिये मुमकिन हो गया। इसके बाद उसकी समझ में

[33] Jackdow is a crow-like bird – native of Europe and Northern Africa.

ही नहीं आया कि अब वह उसको क्या काम दे जो वह न कर सके और उसकी पत्नी उसकी हो जाये।

उसने अपने दिमाग पर काफी ज़ोर डाला और फिर यह प्लान सोचा। उसने उस लड़के को बुलाया ओर उससे कहा — "मेरी मॉ यहीं इसी गॉव में मरी थी। वह अपने साथ एक अॅगूठी ले गयी थी। तुम दूसरी दुनियॉ में जा कर उससे वह अॅगूठी ले आओ। अगर ले आते हो तो ठीक है नहीं तो तुम्हारी पत्नी मेरी हो जायेगी।"

लड़के ने अपने मन में सोचा "यह तो बिल्कुल ही नाममुमकिन काम है। भला दूसरी दुनियॉ मे कोई कैसे जा सकता है।"

ऐसा सोचते सोचते वह घर गया और जा कर अपनी पत्नी को बताया तो उसने लड़के को फिर डॉटा और बोली — "अबकी बार तुम झील जाओ तो उनसे एक बकरा मॉगना।"

सो वह लड़का फिर झील के पास गया और बोला — "ओ माता और पिता मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि मुझे आप अबकी बार बकरा दे दें।"

तुरन्त ही झील में से टेढ़े सीगों वाला एक बकरा निकल आया जिसके मुॅह से आग की लपटें निकल रही थीं। वह लड़के से बोला — "आओ तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

वह लड़का उसकी पीठ पर बैठ गया। उसके बैठते ही बकरा बिजली की सी तेज़ी से नरक की तरफ चल दिया। वह चला और तीर की तरह धरती में घुस गया।

वे चलते रहे चलते रहे। चलते चलते उनको एक आदमी और एक स्त्री एक बैल की खाल पर बैठे हुए मिले। वह बैल की खाल उन दोनों के बैठने के लिये काफी नहीं थी। वे उस पर से गिरे जा रहे थे।

लड़के ने उनसे पूछा — "इसका क्या मतलब कि एक बैल की खाल भी दो लोगों के बैठने के लिये काफी नहीं है।"

उन्होंने कहा — हमने तुम्हारे जैसे कई लोग यहॉ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब हम तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे।"

लड़का फिर आगे की तरफ बढ़ता चला गया। आगे चल कर उसने एक स्त्री और एक आदमी को एक कुल्हाड़ी के हत्थे पर बैठे देखा। इतने छोटे से हत्थे पर वे दो आदमी बैठे थे फिर भी वे गिरने से नहीं डर रहे थे।

लड़के ने उनसे पूछा — "आप लोग एक कुल्हाड़ी के इतने छोटे से हत्थे पर बैठे हैं और फिर भी आप गिरने से डर नहीं रहे।"

उन्होंने कहा — "हमने तुम्हारे जैसे कई लोग यहॉ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब हम तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे।"

सो वे फिर आगे चल दिये। आगे चल कर वे एक ऐसी जगह आये जहॉ एक पादरी जानवरों को घास खिला रहा था। इस पादरी की इतनी लम्बी दाढ़ी थी कि वह जमीन पर फैली पड़ी थी। और वे जानवर बजाय घास खाने के उसकी दाढ़ी खा रहे थे। वह पादरी भी उनको अपनी दाढ़ी खाने से रोक नहीं पा रहा था।

लड़के ने चिल्ला कर पूछा — "पादरी जी इसका क्या मतलब है कि आपकी दाढ़ी इन जानवरों का घास का मैदान है।"

पादरी जी ने कहा — "मैंने तुम्हारे जैसे कई लोग यहॉ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा।"

सो वे और आगे चले तो उन्होंने वहॉ कुछ नहीं देखा सिवाय एक बहुत गरम गड्ढे के जिसमें से आग की लपटें निकल रही थीं। यह नरक था।

बकरा बोला — "अब आप मेरे ऊपर मजबूती से बैठ जाइये क्योंकि अब हमें इस आग को पार करना है।"

लड़के ने उसको कस कर पकड़ लिया और बकरे ने एक बहुत ज़ोर की कूद लगायी और वे आग के ऊपर से बिना किसी परेशानी के कूद गये।

उसके बाद उन्होंने एक बहुत ही दुखी स्त्री को एक सोने के सिंहासन पर बैठे देखा। उसने कहा — "क्या बात है मेरे बच्चे। तुम्हें क्या दुख है? तुम यहॉ क्यों आये हो?"

लड़के ने उसको सब कुछ बता दिया तो वह बोली — "मुझे अपने इस नीच बच्चे को सजा जरूर देनी चाहिये। मैं तुमको उसके लिये एक बक्सा दूँगी। वह तुम यहॉ से उसके लिये जरूर ले जाना।"

कह कर उसने लड़के को एक बक्सा दिया और कहा — "तुम चाहे जो कुछ भी करो पर तुम इस बक्से को अपने आप मत खोलना। तुम इसको अपने राजा को देना और इसको उसे दे कर उसके पास से तुरन्त ही दूर हट जाना।"

लड़के ने उस स्त्री से वह बक्सा लिया और वापस लौट पड़ा। वह उस जगह आया जहॉ पादरी जानवरों को घास खिला रहा था। उसको देखते ही पादरी बोला — "मैंने तुमसे वायदा किया था कि जब तुम लौटोगे मैं तुम्हें तब तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा। सो अब मैं तुम्हारे सवाल का जवाब देता हूँ।

अपनी सारी ज़िन्दगी में मैं केवल अपने आपको ही प्यार करता रहा और मैंने किसी की कोई परवाह नहीं की। मैंने अपने जानवरों को बजाय अपने मैदानों के दूसरे के मैदानों में चराया। इससे मेरे पड़ोसियों के जानवर भूख से मर गये। अब मैं उसी की सजा भोग रहा हूँ।"

चलते चलते वे उस जगह आये जहॉ एक आदमी और एक स्त्री एक कुल्हाड़ी के हत्थे पर बैठे हुए थे। वे भी बोले — "हमने तुमको तुम्हारे लौटने पर जवाब देने का वायदा किया था। सो अब तुम

हमारी बात सुनो। जब हम धरती पर थे तब हम एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और वही बात यहॉ भी है। इसी लिये हमें गिरने का कोई डर नहीं है।"

वह लड़का यह जवाब पा कर फिर अपने रास्ते चल दिया। चलते चलते फिर वह वहॉ आया जहॉ एक स्त्री और एक आदमी एक बैल की खाल पर बैठे हुए थे।

वे भी बोले — "हमने तुमको तुम्हारे लौटने पर जवाब देने का वायदा किया था सो सुनो। हम एक दूसरे को ज़िन्दगी भर बुरा भला कहते रहे और हम यहॉ भी एक दूसरे को बुरा भला कह रहे हैं इसलिये इस बैल की खाल के इतने बड़े होते हुए भी हम गिरे गिरे से लगते हैं।"

इसके बाद लड़का धरती पर आ गया। वह बकरे पर से उतरा और राजा के पास गया। उसने उसको बक्सा दिया और तुरन्त ही उससे दूर चला गया। राजा ने वह बक्सा खोला तो उसमें से तो एक बहुत बड़ी सी आग निकली जो उसे खा गयी।

इस तरह से हमारे सबसे छोटे भाई ने राजा को भी जीत लिया और फिर किसी ने उसकी पत्नी को उससे नहीं मॉगा। वे दोनों प्यार से और खुशी खुशी बहुत दिनों तक रहे।

4 चुहिया राजकुमारी[34]

मेंढक राजकुमारी जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह लोक कथा यूरोप के नोर्स देशों मे से फिनलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा वहॉ की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है। फ़िनलैंड यूरोप के नौर्स देशों के पॉच देशों[35] में से एक है।

एक बार बहुत दूर उत्तर की जमीन पर फ़िनलैंड देश में एक किसान रहता था। उसके तीन बेटे थे।

जब वे बड़े हो गये तो उसने अपने तीनों बेटों से कहा — "बेटा अब तुम लोग बड़े हो गये हो सो अब तुम लोगों को शादी कर लेनी चाहिये। तुम लोग जाओ और अपने अपने लिये पत्नी ढूँढो।

मैं तुम तीनों को बहुत प्यार करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों को अच्छी अच्छी पत्नियॉ मिलें।

इसलिये जो भी लड़कियॉ तुम लोग अपने लिये चुनोगे पहले मैं उनका इम्तिहान लूँगा कि वे तुम्हारे लिये अच्छी पत्नियॉ बनेंगी या नहीं। उसके बाद ही तुमको अपनी चुनी हुई लड़की से शादी की इजाज़त मिलेगी।"

---

[34] The Mouse Princess – A folktale from Finland, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=245
Adapted by Mike Lockett

[35] Norse, Nordic or Scandinavian coutries are five. They are located in the far North of Europe continent. These five countries are – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden.

उसके बेटों ने पूछा — "पर वे हमें मिलेंगी कहॉ पिता जी।"

पिता बोला — "मैं चाहता हूॅ कि तुम तीनों एक एक पेड़ काटो और फिर जिस दिशा में तुम्हारा पेड़ कट कर गिरे तुम उसी दिशा में अपनी पत्नी को ढूॅढने जाओ।

अगर तुमको उस दिशा में बहुत दूर भी जाना पड़े तो भी मुझे यकीन है कि तुमको अपनी पत्नी मिल जायेगी।"

सबसे बड़े बेटे ने जो पेड़ काटा तो वह पेड़ पूर्व की तरफ गिरा। वह बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। मुझे मालूम है कि पूर्व में एक बहुत प्यारी सी देहाती लड़की रहती है। मैं उसके घर जाऊॅगा उसको अपने साथ शादी के लिये पटाऊॅगा और फिर उससे शादी कर लूॅगा।"

बीच वाले बेटे का काटा हुआ पेड़ पश्चिम की तरफ गिरा तो वह भी बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। मुझे मालूम है कि पश्चिम में भी एक बहुत प्यारी सी देहाती लड़की रहती है। मैं उसके घर जाऊॅगा उसको अपने साथ शादी के लिये पटाऊॅगा और फिर उससे शादी कर लूॅगा।"

जब तीसरे सबसे छोटे बेटे ने अपना पेड़ काटा तो वह उत्तर की तरफ गिरा। यह देख कर उसके दोनों बड़े भाई हॅस दिये। क्योंकि वे जानते थे कि उत्तर की तरफ तो केवल जंगल और बरफ थी। उधर की तरफ कोई लड़की कहॉ होगी।

वे बोले — "तुझको तो किसी रेनडियर[36] या भेड़िये से शादी करनी पड़ेगी। क्योंकि उत्तर में तो कोई लड़की ही नहीं है।"

फिर भी सबसे छोटा बेटा जिसका नाम माइकल[37] था अपने पिता की इच्छा के अनुसार अपनी पत्नी ढूँढने के लिये उत्तर की तरफ चल दिया।

दोनों बड़े भाइयों ने अपने पिता का खेत छोड़ा और उस लड़की के पिता के लिये कुछ भेंटें लीं जिससे वे शादी करना चाहते थे और कुछ भेंट अपनी होने वाली पत्नियों के लिये लीं ताकि वे उनको खुश कर सकें और अपनी अपनी दिशाओं में चल दिये।

माइकल भी जंगल में होता हुआ उत्तर की तरफ चल दिया। हालॉकि वह जानता था कि उसको तो उधर कोई लड़की मिलने वाली थी नहीं जो उसकी पत्नी बन सके फिर भी वह उस जंगल में बहुत दूर तक चलता ही चला गया।

आगे जा कर वह एक झोंपड़ी के पास आ पहुँचा।

उस झोंपड़ी को देख कर उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। उसको लगा कि शायद वह उत्तर में अपनी पत्नी पा सके। उसने झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया तो दरवाजा खुला। वह उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि झोंपड़ी तो खाली थी।

---

[36] Reindeer, also known as caribou in North America, is a species of deer native to arctic, sub-arctic, Tundra etc regions. See the picture.

[37] Michael (Mikael) – name of the youngest son

वहाँ तो बस एक छोटी सी चुहिया एक मेज पर बैठी थी। माइकल अपने आपसे बोला — "अरे यहाँ तो कोई नहीं है।"

उस छोटी चुहिया ने कहा — "मैं यहाँ हूँ माइकल।" वह वहाँ मेज पर बैठी अपने छोटे पंजों से अपनी मूँछें सँवार रही थी।

"पर तुम तो एक छोटी सी चुहिया हो। मुझे तो आशा थी कि मुझे यहाँ एक सुन्दर सी लड़की मिलेगी जिसको मैं अपनी पत्नी बनाऊँगा।"

तब उसने उसको अपनी और अपने भाइयों की शादी के बारे में अपने पिता की इच्छा बतायी।

फिर वह बोला — "मुझे मालूम है कि वे लोग तो शादी कर ही लेंगे। पर मैं भी यह नहीं चाहता कि मेरे पिता मेरी तरफ से नाउम्मीद हों कि मैं अपनी पत्नी नहीं ढूँढ सका।"

छोटी चुहिया बोली — "तुम मुझसे अपनी पत्नी बनने के लिये क्यों नहीं कहते? यहाँ उत्तर में तो कोई लड़की रहती नहीं पर मैं तुम्हें प्यार करूँगी और तुम्हारे लिये वफादार भी रहूँगी।"

माइकल ने उस छोटी चुहिया को अपने हाथों में उठाया तो उसने माइकल के लिये अपनी मीठी आवाज में गाना शुरू कर दिया।

माइकल उसको और पास से देखने के लिये अपने चेहरे तक ले कर आया तो वह चुहिया उसकी उँगलियों पर चढ़ गयी और अपनी छोटी सी नाक से उसके गाल सहलाने लगी।

माइकल उस छोटी सी चुहिया को पसन्द किये बिना नहीं रह सका। इसके अलावा वह अपने पिता को नाउम्मीद भी करना नहीं चाहता था।

वह बोला — "ठीक है ओ छोटी चुहिया। मैं अपने पिता से जा कर कह दूँगा कि मुझे अपनी पत्नी मिल गयी।"

यह सुन कर चुहिया बोली — "पर तुम्हारे लिये एक चुहिया से शादी करना बहुत मुश्किल होगा। ऐसा करते हैं कि मैं यहीं ठहरती हूँ तब तक तुम अपने पिता को इस खबर के लिये तैयार करके आओ।"

माइकल की समझ में आ गया कि वह चुहिया ठीक कह रही थी सो वह चुहिया को वहीं छोड़ कर अकेला ही घर वापस लौट गया।

सबसे बड़े भाई ने कहा — "मेरी वाली की तो बहुत सुन्दर आँखें है।"

बीच वाले भाई ने कहा — "और मेरी वाली के तो बाल और मुस्कान दोनों ही बहुत सुन्दर है। तुमको शादी करने के लिये कोई लोमड़ी या भेड़िया मिला क्या?"

माइकल ने उनसे इतनी ज़ोर से कहा ताकि उसके पिता भी सुन लें — "तुम लोग मेरी चिन्ता मत करो। मुझे तो एक बहुत ही प्यारी

और नाजुक सी चीज़ मिल गयी है। और वह मखमल के कपड़े पहनती है।"

"मखमल के कपड़े?" कह कर उसके दोनों बड़े भाई ज़ोर से हँस पड़े। "तुमने तो लगता है कि उस उत्तरी जंगल और बरफ में कोई राजकुमारी ढूँढ ली है।"

माइकल बोला — "हाँ मखमल के कपड़े। बिल्कुल राजकुमारियों की तरह से। और जब वह मेरे लिये गाती है तो उसकी मीठी आवाज तो मुझे बहुत ही अच्छी लगती है।"

यह सुन कर उसके दोनों बड़े भाई उससे जलने लगे कि उनके छोटे भाई को तो उत्तर में भी इतनी अच्छी लडकी मिल गयी। पर इसमें वे क्या कर सकते थे।

कुछ दिन बाद पिता बोला — "मैं अभी भी यह तय नहीं कर पा रहा हूँ कि किसको सबसे अच्छी पत्नी मिली है। इसलिये मैं चाहता हूँ कि मेरी हर एक बहू मेरे लिये डबल रोटी बनाये ताकि मैं यह देख सकूँ कि वह तुमको ठीक से खाना खिला सकेगी भी या नहीं।"

सुनते ही दोनों बड़े भाई अपने छोटे भाई माइकल से बोले — "मुझे मालूम है कि मेरी वाली सबसे अच्छी डबल रोटी बनायेगी। पर माइकल तुम्हारी राजकुमारी?"

माइकल बोला — "यह तो मुझे उससे पूछना पड़ेगा।"

पर असल में तो वह चिन्ता कर रहा था कि उसकी चुहिया डबल रोटी बनायेगी भी कैसे। फिर भी वे तीनों भाई एक साथ घर से निकल पड़े अपनी अपनी होने वाली पत्नियों से डबल रोटी बनवाने के लिये।

छोटी चुहिया ने जब माइकल को वापस आते देखा तो वह तो गाने नाचने लगी। और जब उसने आ कर उसे यह बताया कि उसको डबल रोटी बनानी है तो वह हँस दी।

माइकल बोला — "मैं तो तुमसे यह कहते हुए डर रहा था कि तुम डबल रोटी बना दो।"

वह फिर हँसी और एक छोटी सी घंटी बजा कर बोली — "तुमको तुम्हारी डबल रोटी जरूर मिलेगी माइकल। बस ज़रा सा इन्तजार करो।"

माइकल ने देखा कि छोटी चुहिया के घंटी बजाते ही दरवाजे से सैंकड़ों की तादाद में चूहे चले आ रहे हैं। छोटी चुहिया ने उनसे कहा — "तुम सब जाओ और गेहूँ के सबसे बढ़िया वाले दाने ले कर आओ।"

वे सब चूहे तुरन्त ही वहाँ से भाग गये और कुछ ही देर में गेहूँ के सबसे बढ़िया वाले दाने ले कर वहाँ आ गये। छोटी चुहिया ने उन गेहूँ के दानों से डबल रोटी बनानी शुरू कर दी।

माइकल बड़े आश्चर्य से उस छोटी चुहिया को उन गेहूँ के दानों से डबल रोटी बनाते देखता रहा।

अगले दिन तीनों भाई अपनी अपनी डबल रोटियॉ ले कर अपने पिता के पास पहुॅचे। सबसे बड़ा भाई राई[38] की बनी डबल रोटी ले कर आया था। बीच वाला भाई जौ की बनी डबल रोटी ले कर आया था।

पिता ने उन दोनों की डबल रोटियॉ चखीं और कहा कि उनकी होने वाली पत्नियों ने बहुत अच्छी डबल रोटियॉ बनायी हैं। देहाती लड़कियों को जैसी डबल रोटी बनानी चाहिये उन्होंने वैसी ही डबल रोटियॉ बनायी है। वह सन्तुष्ट था कि शादी के बाद उसकी दोनों बहुऐं उसके बेटों को ठीक से खाना खिलाती रहेंगीं।

तब माइकल ने अपनी सफेद डबल रोटी अपने पिता को दी। पिता ने उसको भी देखा और चखा तो बोला — "अरे यह तो बहुत सुन्दर सफेद डबल रोटी है जरूर किसी अच्छे और मॅहगे अनाज की होगी। लगता है कि तुम्हारी होने वाली पत्नी बहुत अमीर है।"

माइकल बोला — "उसने तो बस घंटी बजायी और उसके नौकर उसके लिये डबल रोटी बनाने का आटा ले कर आ गये। और उसने फिर डबल रोटी बना दी।"

दोनों बड़े भाई बहुत खुश हुए जब उनके पिता ने कहा — "अब हम एक और इम्तिहान लेंगे। तुम सबकी होने वाली पत्नियों को एक काम और करना पड़ेगा। मैं देखना चाहता हूॅ कि वे सिलाई

[38] Rye is a kind of grain.

भी कर सकती हैं या नहीं। तुम लोग उनके हाथ के बुने हुए कपड़े का नमूना ले कर आओ"

यह सुन कर दोनों बड़े भाई तो खुश थे क्योंकि वे जानते थे कि उनकी होने वाली पत्नियॉ कपड़ा बुनना जानती थीं पर वे यह तो सोच भी नहीं सकते थे कि कोई राजकुमारी भी कपड़ा बुन सकती है तो उनके छोटे भाई का क्या होगा।

माइकल भी चिन्तित था। वह भी यही सोचता था कि कोई चुहिया भी कपड़ा बुन सकती है क्या। फिर भी वह सोच कर मुस्कुराया कि अगर वह चुहिया कपड़ा न भी बुन सकेगी तो भी कम से कम वह उस बोलने वाली चुहिया से फिर से मिल तो सकेगा।

जब माइकल चुहिया के पास पहुँचा तो चुहिया उसको देख कर फिर बहुत खुश हो गयी। वह तुरन्त ही माइकल के खुले हाथों पर चढ़ गयी और वहॉ नाचने लगी।

माइकल बोला — "मै तुमको देख कर बहुत खुश हूँ चुहिया रानी लेकिन..."

"लेकिन क्या माइकल। क्या तुम्हारे पिता को कुछ और चाहिये?"

"वह तुम्हारे हाथ के बुने हुए कपड़े का नमूना देखना चाहते हैं। क्या तुम कपड़ा बुन सकती हो? मैंने तो कभी सुना नहीं कि कोई चुहिया भी कपड़ा बुन सकती है।"

यह सुन कर चुहिया फिर हॅसी और एक बार फिर उसने अपनी छोटी घंटी बजायी और एक बार फिर उसी दरवाजे से सैंकड़ों की तादाद में चूहे वहॉ आ गये। वे अपनी राजकुमारी के हुकुम के लिये उसकी तरफ देखने लगे।

चुहिया ने उनसे कहा — "जाओ और सबसे बढ़िया अलसी[39] की रुई ले कर आओ।"

जब वे अलसी की रुई ले आये तो उस चुहिया ने उस रुई का बहुत ही बढ़िया धागा कातना शुरू किया। धागा कातने के बाद उसने उसका एक बहुत ही बढ़िया रूमाल बुना। वह इतना बढ़िया और बारीक बुना हुआ था कि उसने उसको बुनने के बाद गिरी के एक खोल में रख दिया।

फिर वह माइकल से बोली — "लो इस गिरी के खोल को तुम अपने पिता के पास ले जाओ। इससे उनको पता चल जायेगा कि मैं कपड़ा भी बुन सकती हूॅ या नहीं।"

जब तीनों भाई अपने पिता के पास पहुॅचे तो दोनों बड़े भाई मुस्कुराये। उनको ऐसा लग रहा था कि जैसे उनके सबसे छोटे भाई के पास कोई बुना हुआ कपड़ा था ही नहीं।

इसका मतलब यह था कि उसकी होने वाली पत्नी उनके पिता को खुश नहीं कर पायेगी। जबकि माइकल ने गिरी का वह खोल

[39] Translated for the word "Flax"

जिसमें उसका बुना हुआ कपड़ा रखा था अपनी जेब में रखा हुआ था।

पिता ने दोनों बड़े बेटों के लाये हुए कपड़े देखे। उसने कहा — "तुम लोगों की होने वाली पत्नियॉ तुम्हारे लिये अच्छा कपड़ा बनायेंगी और तुमको ठीक से कपड़े पहनायेंगी और गरम रखेंगी। उनका काम सादा है पर समय के साथ साथ सुधरता जायेगा।"

फिर उसने माइकल से पूछा — "बेटे तुम्हारी होने वाली पत्नी के हाथ का बुना कपड़ा कहॉ है। क्या तुम्हारी होने वाली पत्नी भी तुम्हारे लिये कोई कपड़ा बुन सकी?"

माइकल ने अपनी जेब से गिरी का एक खोल निकाला और अपने पिता को दे दिया।

उसके भाई तो उसको देखते ही हॅस पड़े — "तो तुम्हारी राजकुमारी ने हमारे पिता को कपड़े की बजाय गिरी का एक खोल भेजा है।"

तब उनके पिता ने गिरी के उस खोल को खोला तो देखा कि उसके अन्दर तो तह किया हुआ एक बहुत बढ़िया कपड़ा रखा था। उसने उसकी तह खोली तो देखा कि वह तो दुनियॉ का सबसे अच्छा कपड़ा था। उसने तो इतना अच्छा कपड़ा पहले कभी देखा ही नहीं था।

उसको देख कर तो उसके बड़े भाइयों की हॅसी रुक गयी। पिता को भी उस कपड़े को देख कर बहुत आश्चर्य हुआ।

वह भी बोला — "यह तो बहुत सुन्दर काम है। तुम्हारी होने वाली पत्नी इतना सुन्दर और बढ़िया कपड़ा कैसे बुन पायी?"

माइकल बोला — "उसने अपनी छोटी सी घंटी बजायी और उसके नौकर उसके लिये अलसी की रुई ले आये। तब उसने उसका धागा बनाया और फिर यह रूमाल बुन दिया।"

पिता बोला — "यह सब तो बहुत अच्छा था अब मैं तुम लोगों की होने वाली पत्नियों से मिलना चाहूँगा ताकि फिर तुम लोगों की शादी की जा सके सो तुम उनको यहॉ ले कर आओ।"

यह सुन कर माइकल ने सोचा कि अगर मैं अपनी होने वाली पत्नी को यहॉ ले कर आऊँगा तो मेरे बड़े भाई जब यह देखेंगे कि इसकी होने वाली पत्नी तो एक चुहिया है मुझ पर हॅसेंगे। और मेरे पिता भी मेरी उससे शादी करने पर राजी नहीं होंगे। पर मैं उस सबकी चिन्ता नहीं करता।

उसने मेरे लिये डबल रोटी बनायी। उसने मेरे लिये कपड़ा बुना। वह गाती है वह नाचती है वह बहुत दयालु भी है। मैं तो बस उसी की परवाह करता हूँ चाहे वह एक चुहिया ही सही।"

यही सोच कर वह फिर से चुहिया के घर की तरफ चल दिया ताकि वह उसको साथ ले कर अपने पिता से मिलवाने के लिये उनके पास आ सके।

वह फिर से उसी झोंपड़ी में जा पहुँचा। उसको देखते ही चुहिया फिर से उसके हाथों में चढ़ गयी।

माइकल ने उससे कहा कि उसके पिता उससे मिलना चाहते हैं।

छोटी चुहिया तो यह सुन कर खुशी से पागल सी हो गयी। उसने अपनी वह छोटी सी घंटी एक बार फिर बजायी तो पहले की तरह से फिर से वहॉ सैंकड़ों चूहे दरवाजे से अन्दर आ गये। उसने उनसे कहा कि वे उसकी गाड़ी तैयार करें।

जल्दी ही गिरी का एक खोल वहॉ आ गया। उस गिरी के खोल को दो चूहे खींच रहे थे। एक चूहा उस गाड़ी के कोचवान की जगह बैठ गया। दूसरा चूहा एक नौकर की तरह उस गाड़ी के पीछे एक बक्से पर बैठ गया। उस नौकर चूहे ने छोटी चुहिया को गाड़ी में बिठाया और गाड़ी वहॉ से चल दी।

माइकल भी मुस्कुराता हुआ अपनी होने वाली पत्नी की गाड़ी के साथ साथ अपने पिता के घर चल दिया।

वह चुहिया से कहता जा रहा था — "मेरे भाई मुझ पर हॅस सकते हैं। यहॉ तक कि मेरे पिता भी शायद इस शादी से खुश नहीं होंगे पर मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता। मैं हमेशा तुम्हारी रक्षा करूॅगा। और तुम और मैं हमेशा खुश रहेंगे। मैं तुमको उसी तरह से रखूॅगा जैसे कोई अपनी असली पत्नी को रखता है।"

जब वे जा रहे थे तो उनको एक पुल पार करना था। यह पुल जंगल पार करके एक नदी पर बना हुआ था।

जब माइकल यह सब कह रहा था तभी वे उस पुल पर पहुँचे तो वहॉ हवा इतने ज़ोर से चल रही थी कि गिरी के खोल की वह गाड़ी, उस गाड़ी का कोचवान, उसके दोनों काले चूहे जो उस चुहिया की गाड़ी खींच रहे थे, चुहिया राजकुमारी और उसके दोनों नौकर सब उस हवा में उड़ गये और नदी में डूब गये।

और माइकल उनको गिरने से रोक भी न सका।

उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। उसके मुँह से निकला — "ओह छोटी चुहिया, मुझे तुम्हारे इस तरह पानी में गिरने का बहुत अफसोस है। तुम मेरे ऊपर कितनी मेहरबान थीं। मुझे तुम्हारे साथ बात करना और तुम्हारा गाना बहुत याद आयेगा।

और अब जब तुम चली गयी हो मुझे तब पता चल रहा है कि मैं तो तुमको अपनी असली पत्नी की तरह से ही चाहता था।"

जब वह ऐसा बोल रहा था तभी उसने देखा कि एक बहुत बड़ी सुनहरी गाड़ी जिसको दो बहुत सुन्दर घोड़े खींच रहे थे नदी के किनारे किनारे आ रही थी।

एक लम्बा सा नौकर उस गाड़ी के पीछे खड़ा हुआ था। एक बहुत सुन्दर लड़की उस गाड़ी में बैठी हुई थी। इतनी सुन्दर लड़की तो माइकल ने पहले कभी देखी नहीं थी।

वह खुद बरफ जैसी सफेद थी। उसके होठ बैरीज़ जैसे लाल थे। उसने सफेद मखमल के कपड़े पहने हुए थे और अपने सुनहरे बालों में बहुत सारे जवाहरात पहने हुए थे।

उसने माइकल को पुकार कर कहा — "क्या तुम मेरे साथ मेरी गाड़ी में बैठना पसन्द नहीं करोगे माइकल? मैं अपने होने वाले पति के पिता से मिलने जा रही हूॅ।"

माइकल कुछ दुखी आवाज में बोला — "नहीं मैं नहीं बैठ सकता। मेरी अपनी होने वाली पत्नी तो यहॉ नदी में डूब गयी है।"

उस सुन्दर लड़की ने कहा — "तुमने मुझे नहीं खोया है माइकल। मैं ही तुम्हारी वह छोटी चुहिया हूॅ। मैंने ही तुम्हारे पिता के लिये डबल रोटी बनायी थी मैंने ही तुम्हारे पिता के लिये कपड़ा बुना था।

मैं अब तक एक जादू के ज़ोर में थी जिसने मुझे एक चुहिया बना दिया था। जब तुमने कहा कि तुम मुझे प्यार करते हो बस तभी मेरा वह जादू टूट गया और मैं फिर से आदमी बन गयी। चलो अब हम तुम्हारे पिता के पास चलते हैं ताकि वह हमारी शादी की इजाज़त दे दें।"

फिर वे माइकल के पिता के घर पहुॅचे। वहॉ जा कर वह उन लडकियों से मिला जो उसके भाइयों से शादी करने वाली थीं।

पिता ने सबको अपना आशीर्वाद दिया और अपने सब बेटों की शादी उनकी लायी हुई लड़कियों से शादी कर दी।

माइकल के दोनों बड़े भाई अपने पिता के खेत पर अपनी अपनी पत्नियों के साथ आराम से रहे। माइकल अपनी चुहिया के साथ उसके राज्य चला गया। वहॉ वे जब तक ज़िन्दा रहे खुशी खुशी रहे।

5 बॅदरिया दुलहनियॉ

यह कहानी हमें हमारी मॉ हमें सुनाया करती थीं। यह एक बहुत ही अच्छी प्यारी कहानी है।

एक राजा था उसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटे बहुत लायक थे तो वह सोच ही नहीं पा रहा था कि वह उनकी शादी कैसे करे।

फिर उसके दिमाग में एक बात आयी और उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे बच्चों अब तुम शादी लायक हो गये हो। अब तुमको शादी कर लेनी चाहिये।

तुम लोग ऐसा करो कि तुम तीनों अपने अपने तीर कमान लो और तीर फेंको। जिसका तीर जहॉ जा कर पड़ेगा उसी लड़की से उसकी शादी होगी।"

यह सुन कर तीनों एक मैदान में पहुॅचे और अपनी अपनी इच्छा अनुसार अपने अपने तीर चला दिये। बड़े राजकुमार का तीर एक राज्य में जा कर पड़ा तो उसकी शादी उस राज्य की राजकुमारी से कर दी गयी।

दूसरे राजकुमार का तीर भी एक राज्य में जा कर पड़ा सो उसकी शादी भी उस राज्य की राजकुमारी से कर दी गयी।

तीसरे राजकुमार ने भी अपना तीर चलाया तो वह अपना तीर ढूँढने निकला तो उसको तो अपना तीर ही कहीं नहीं मिला। वह बेचारा परेशान सा इधर से उधर घूमता रहा।

तभी उसको एक आवाज सुनायी पड़ी — "ओ राजकुमार तुम क्या ढूँढ रहे हो?"

राजकुमार ने इधर उधर देखा तो उसको वहाँ कोई दिखायी नहीं पड़ा पर आवाज तो उसने सुनी थी सो उसने फिर से इधर उधर देखा।

उसको फिर से एक आवाज सुनायी पड़ी — "राजकुमार, इधर देखो इस पेड़ के ऊपर।"

राजकुमार ने पेड़ के ऊपर देखा तो वहाँ उसको एक बँदरिया दिखायी दी। वह बँदरिया फिर बोली — "तुम अपना तीर ढूँढ रहे हो न। यह लो अपना तीर।"

यह देख कर राजकुमार तो यह सोच कर ही बहुत दुखी और गुस्सा हो गया कि अब उसको इस बँदरिया से शादी करनी पड़ेगी।

पर प्रगट में वह बोला — "पर तुमने मेरा यह तीर क्यों पकड़ा? यह तीर तो हमारे पिता ने हमारी दुलहिनें चुनने के लिये छुड़वाया था। अब तुमने इसे बीच में ही पकड़ लिया है तो मुझे अब तुमसे शादी करनी पड़ेगी।"

"तो क्या हुआ। कर लो न तुम मुझसे शादी।"

"क्या? मैं एक बॅदरिया से शादी कर लूँ? राजकुमार होकर एक बॅदरिया से शादी? नहीं नहीं यह नहीं हो सकता।"

बॅदरिया मुस्कुरायी और बोली — "पर अब तो यह होकर ही रहेगा क्योंकि अब तुम्हारा तीर मेरे पास है न।" कह कर वह पेड़ पर से कूद कर राजकुमार के कन्धे पर बैठ गयी।

अब क्या था राजकुमार को उस बॅदरिया को ही अपने पिता के पास ले जाना पड़ा। राजा को उसे देख कर हॅसी आ गयी पर स्थिति को देखते हुए उसने अपने सबसे छोटे राजकुमार की शादी फिर उसी बॅदरिया से कर दी।

पर वह भी अपने इस राजकुमार के बारे में कुछ परेशान सा रहा।

कुछ समय बाद उसने अपनी तीनों बहुओं का इम्तिहान लेने की सोची। सो उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मैं देखना चाहता हूँ कि मेरी कौन सी बहू सबसे अच्छी सिलाई करती है सो तुम लोग अपनी अपनी बहुओं से कहो कि वे मेरे लिये एक कमीज बनायें।"

उसके बड़े बेटों को तो कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि उनकी पत्नियाँ तो सिलाई जानती थीं वे कमीज सिल सकती थीं पर वे सभी अपने सबसे छोटे भाई के बारे में सोच सोच कर बहुत परेशान हो रहे

थे कि वह बेचारा यह सब कैसे करेगा क्योंकि उसकी पत्नी तो एक बॅदरिया थी। वह कमीज कैसे सिलेगी।

पर राजा का हुकुम तो राजा का हुकुम था उसका पालन तो सबको करना ही था सो सबने अपने अपने घर जा कर अपनी अपनी पत्नियों को राजा का हुकुम सुनाया। दोनों बड़ी बहुऐं तो सुनते ही अपने काम पर लग गयीं।

पर जब छोटा राजकुमार अपनी बॅदरिया के पास पहुॅचा तो वह बहुत उदास था। बॅदरिया ने उससे पूछा कि वह क्यों उदास था तो उसने उसको राजा का हुकुम सुना दिया।

बॅदरिया मुस्कुरा कर बोली — "अरे तो इसमें इतना सोचने की क्या बात है तुम हाथ मुॅह धो कर खाना खाओ पिता जी को उनकी कमीज मिल जायेगी।"

राजकुमार यह सुन कर कुछ सोच में पड़ गया कि यह बॅदरिया उसके पिता की कमीज कैसे सिलेगी पर क्योंकि उसके पास और कोई चारा नहीं था सो वह मुॅह हाथ धो कर खाना खाने बैठ गया।

जब कमीज देने का समय आया तो तीनों राजकुमार अपनी अपनी पत्नियों के हाथों की बनी कमीज ले कर राजा के पास पहुॅचे।

सबकी निगाह छोटे राजकुमार के हाथों पर लगी थीं कि वह अपने हाथ के पैकेट में से क्या निकालेगा।

पर आश्चर्य जब उसने अपना पैकेट खोला तो उसमें से तो एक बहुत ही सुन्दर राजा के पहनने के लायक कमीज निकली। छोटा राजकुमार खुद भी उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि यह सब कैसे हो गया। पर वह कमीज तो वहाँ थी।

राजा उस कमीज को देख कर बहुत खुश हुआ।

अब राजा ने उन सबको एक दूसरा काम दिया। उसने कहा कि वे सब अपनी अपनी बहुओं से एक एक मेजपोश कढ़वा कर लायें।

राजा का हुकुम। सब बहुओं ने मेजपोश काढ़ना शुरू कर दिया।

छोटा राजकुमार जब घर पहुँचा तो वह फिर से बहुत उदास था। बँदरिया के फिर से पूछने पर कि वह क्यों उदास था उसने बताया कि राजा ने इस बार सबको एक एक मेजपोश काढ़ने के लिये कहा है।

बँदरिया बोली — "तो इसमें इतना उदास होने की क्या बात है? आओ पहले खाना खा लो।"

"यह काम तुम कैसे करोगी?"

"जैसे मैंने कमीज सिली थी वैसे ही यह काम भी हो जायेगा। तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो आओ खाना खा लो।"

राजकुमार के पास फिर कोई चारा नहीं था सो वह खाना खाने बैठ गया। पर आज वह उतनी चिन्ता नहीं कर रहा था जितनी कमीज सिलते समय कर रहा था।

समय आने पर बॅदरिया ने उसको अपने हाथ का कढ़ा हुआ मेजपोश राजा को ले जा कर देने के लिये दिया।

जब तीनों राजकुमार अपने अपने मेजपोश राजा को दिखाने लगे तो दोनों बड़े राजकुमार कुछ चिन्ता से अपने छोटे भाई की तरफ देखने लगे। वे उसके लिये वाकई परेशान थे।

पर यह क्या? बॅदरिया के हाथ का कढ़ा हुआ मेजपोश तो बहुत ही सुन्दर और बड़ी बारीक कढ़ाई का कढ़ा हुआ था। सभी ने उसकी कढ़ाई देख कर दॉतों तले उॅगली दबा ली।

राजा उस मेजपोश को देख कर बहुत खुश हुआ। अब उसने तीसरा और आखिरी इम्तिहान रखा। वह यह देखना चाहता था कि उसकी कौन सी बहू सबसे अच्छा खाना बनाती थी।

उसने दिन निश्चित कर दिये कि फलॉ फलॉ दिन वह अपने बेटों के घर खाना खाने आयेगा। राजा का हुकुम।

नियत दिन राजा अपने बेटों के घर खाना खाने पहुॅचा। दोनों बड़े बेटों की बहुओं ने बहुत अच्छा खाना बनाया था। राजा उनके हाथ के बने खाने से बहुत सन्तुष्ट था।

वहाँ से खाना खा कर वह अपने तीसरे बेटे के घर पहुँचा। बँदरिया बहू ने राजा का मन से स्वागत किया और उसको खाना खाने के लिये बिठाया।

राजा के सामने खाना परोसा गया। बहुत सारे खाने बनाये गये थे। राजा तो उनको गिनते गिनते ही थक गया।

इसके अलावा एक बात और भी थी कि जब भी कोई लड़की उसको खाना परोसने आती तो वह हर बार दूसरे कपड़े पहने आती।

इससे राजा को लगा कि जैसे उसके बेटे के एक पत्नी न हो कर कई पत्नियाँ हों। उसने इसकी जाँच करनी चाही। सो एक बार जब एक लड़की उसको खाना परसने आयी तो उसने उसके पैर पर दही की एक छींट डाल दी।

जब दोबारा कोई खाना परसने आयी तो उसने वह दही की छींट उसके पैर पर देखनी चाही।

इत्तफाक से वह उसको वहाँ दिखायी नहीं दी तो उसको विश्वास हो गया कि उसके छोटे बेटे के तो कई पत्नियाँ थीं।

पर राजा वह खाना खा कर बहुत खुश और सन्तुष्ट था।

खाना खाने के बाद राजा ने अपने बेटे से पूछा — “क्या यह सब खाना तुम्हारी उस बँदरिया पत्नी ने ही बनाया है?”

"जी हॉ।"

"और तुम्हारे कितनी पत्नियॉ है?"

"यह कैसा सवाल है पिता जी?"

"बुरा न मानना बेटे। मुझे लगा कि तुम्हारे कई पत्नियॉ हैं क्योंकि जब भी मुझे कोई खाना परोसने आती थी वह हर बार दूसरे कपड़े पहने होती थी। और कोई इतनी जल्दी अपने कपड़े बदल नहीं सकता इसी लिये मैंने पूछा।

"नहीं पिता जी। मेरे एक ही पत्नी है पर वह है बहुत ही होशियार। मैं आपको उससे अभी मिलवाता हूॅ।"

इतने में ही उसकी बॅदरिया पत्नी एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी के रूप में आ कर खड़ी हो गयी।

राजकुमार ने भी उसको इस रूप में इससे पहले कभी नहीं देखा था तो वह तो उसको देखते ही भौंचक्का रह गया। राजा के भी मुॅह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह भी उसको देखता का देखता रह गया था।

बॅदरिया ने बताया कि एक परी ने उसे बॅदरिया बनने का शाप दिया था और कहा था कि वह इस शाप से तभी छूटेगी जब कोई उससे शादी कर लेगा और फिर वह तीन इम्तिहानों में पास हो जायेगी।

वह राजा की बहुत कृतज्ञ थी कि उसने उसके तीन इम्तिहान लिये और उसको उस परी के शाप से आजाद होने में सहायता की।

आज उसके वे तीन इम्तिहान पूरे हो गये और वह उनमें पास हो गयी सो आज वह अपने उस शाप से छूट गयी। वह इस सबके लिये राजकुमार और राजा की बहुत ही ज़्यादा कृतज्ञ थी।

राजा को भी यह देख कर बहुत खुशी हुई कि उसके तीनों बेटे अपने अपने घर में अब ठीक से रह रहे थे।

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories
2. Tom Thumb Like Stories
3. Six Swans Like Stories
4. Three Oranges Like Stories
5. Snow White and the Seven Dwarves Like Stories
6. Sleeping Beauty Like Stories
7. Pig King Like Stories
8. Puss in Boots Like Stories
9. Hansel and Gratel Like Stories
10. Red Riding Hood Like Stories
11. Cinderrella Like Stories
12. Cinderella in the World
13. Rumplestiltuskin Like Stories
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Frog Princess Like Stories

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**